~~वैदिक संस्कृति~~

मुगल साम्राज्य

Lecture given by -

Mamta Rani

Guest Assistant Professor

Deptt. of History.

SNSRKS College, Saharsa,

Bihar.

एक बार फिर अफगान विद्रोही हो गये थे इनमें कुछ विद्रोही अफगानों में उस्मान खाँ, मुशा खाँ, जो 12 भुंइया के नाम से जाने जाते थे: अत्यधिक सक्रिय थे अतः जहाँगीर ने इनके दमन के लिए शेख सलीम चिश्ती के पोते इस्लाम खान को भेजा। इस्लाम खान ने अफगानों को पराजित किया किन्तु फिर जहाँगीर ने बंगाल में स्थायी शांति कायम करने के उद्देश्य से अफगानों से मित्रता स्थापित कर ली। उन्हें मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत उच्च पद और ओहदे दिये तथा उन्हें मुगल मनसबदारी में शामिल किया।

महाराणा प्रताप की मृत्यु के बाद भी मेवाड़ का राज्य मुगल सम्राज्य के साथ संघर्ष करता रहा था जहाँगीर ने मेवाड़ के विरुद्ध निरंतर सैनिक अभियान भेजे। अन्त में उसने मेवाड़ के विरुद्ध शहजादा खुर्रम को भेजा अतः 1615 ई० तक मेवाड़ के शासक राणा अमर सिंह ने समर्पण कर दिया।

कांगड़ा का किला जीतने के लिए जहाँगीर ने विक्रमजीत बघेला को भेजा अतः 1620 ई० तक कांगड़ा पर जहाँगीर का कब्जा हो गया।

नहीं ले सकता यह उसका अदूरदर्शितापूर्ण कदम था। इतना ही नहीं उसने जैनियों को निर्वासित कर दिया क्योंकि उसके विचार में वे सार्वजनिक नैतिकता के लिए एक समस्या थी। इसे भी एक अतिवादी माना जा सकता है, किंतु उपर्युक्त सभी घटनाओं को अपवाद के रूप में देखा जा सकता है।

नूरजहाँ तथा उसका जुन्टा (चौकड़ी)

बेनी प्रसाद ने एक जुन्टा अथवा चौकड़ी की अवधारणा दी है तथा यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि जहाँगीर के नीति निर्माण में इस जुन्टा अथवा चौकड़ी का गहरा प्रभाव था किंतु प्रो० नुरुल हसन ने नवीनतम साक्ष्यों के आधार पर इस तथ्य का खण्डन किया है तथा इस बात पर बल दिया है कि अपने जीवन के अन्तिम काल तक जहाँगीर स्वतंत्र रूप में निर्णय लेता रहा था।

बंगाल, मेवाड़ एवं कांगड़ा से सम्बंधित अभियान

बताया जाता है कि बंगाल के सुबेदार मानसिंह ने विद्रोही अफगानों का दमन किया था किंतु मानसिंह का बंगाल से वापस आने के पश्चात्

में जो एक एक प्रकार का असंतुलन कायम हो गया था वह जहाँगीर के काल में दूर हो गया।

धार्मिक नीति :-

जहाँगीर ने अकबर की उदार धार्मिक नीति को जारी रखी। बताया जाता है कि कुछ समय तक उसने दीन-ए-इलाही की पद्धति को भी जारी रखी थी। सबसे बढ़कर उसकी धार्मिक उदारता का प्रमाण है उसके द्वारा मंदिरों के निर्माण के लिए मथुरा, वृन्दावन और बनारस में भूमिअनुदान दिया जाना और यहाँ वीर सिंह बुंदेला के द्वारा मंदिरों का निर्माण कराया जाना। इतना ही नहीं जब उसके कुछ पोर्तो ने मस्जिदों को अपना लिया तो उसने इसपर कोई आपत्ति नहीं जतायी।

किन्तु उसके कुछ कदम उदार नहीं माने जा सकते। उदाहरण के लिए उसने गुरु अर्जुन देव की हत्या करायी, इसके कारण एक शांति के समर्थक सिख पंथ का सैनिकीकरण हो गया। किन्तु इस घटना को धार्मिक कट्टरता के रूप में न देखकर एक राजनीतिक प्रतिशोध के रूप में देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त उसने पुष्कर में एक वराह मूर्ति को नष्ट कर दिया क्योंकि उसका मानना था कि कोई भी ईश्वर पशु रूप में अवतार

कोई पृथक धर्म चलाना उसका उद्देश्य नहीं था फिर उसने इसके माध्यम से बादशाहत के लिए अमीरों की वफादारी सुनिश्चित करनी चाही थी किन्तु इस तथ्य को वदायुनि अथवा स्मिथ नहीं समझ सका।

इस प्रकार दीन - ए- इलाही मूर्खता का स्मारक नहीं अपितु एक नवीन राजनीतिक आरम्भ था।

अकबर का उत्तराधिकारी :-

जहाँगीर (1605-1628)

राजपूत नीति :-

जहाँगीर ने अकबर की राजपूत नीति को जारी रखा। राजपूत कुलीनों को पद और औहदे दिये जाते रहे तथा राजपूत परिवारों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध कायम रहे किन्तु जहाँगीर के काल में कच्छवाहा राजपूत वंश का महत्व कम हुआ जबकि बुंदेला परिवार की शक्ति और महत्व बढ़ गये। इससे राजपूत के साथ सम्बन्धों मे कोई व्यावधान नहीं आया इसके विपरित कच्छवाहा परिवार का महत्व अत्यधिक घट जाने के कारण राजपूतों के साथ सम्बन्धों

वस्तुत: इस काल तक किसी संस्थागत धार्मिक पद्धति पर से अकबर का विश्वास उठ चुका था।

(ii) अकबर कुछ सामुहिक मूल्य पद्धति के आधार पर भिन्न क्षेत्रीय, नस्लीय और साम्प्रदायिक समूहों को कुछ निश्चित कार्यक्रम से जोड़ रखना चाहता था ताकि अलगाववादी पद्धति दबी रहे। इस रूप में दीन-ए-इलाही की तुलना अशोक के धम्म से भी की जाती है।

(iii) दीन-ए-इलाही के माध्यम से अकबर व्यक्तिगत वफादारी के आधार पर अमीर वर्ग को बादशाह से जोड़े रखना चाहता था। समकालीन सफवी शासकों ने भी यही पद्धति अपनायी थी।

समाज सुधारक के रूप में :-

अकबर को पूर्व आधुनिक काल का महान समाज सुधारक माना जा सकता है।

(1.) 1562 में युद्ध बन्दियों को जबरन दास बनाने पर पाबंदी

(ii) 1580 में दास व्यापार पर पाबंदी तथा 1582 में दास व्यवस्था को समाप्त कर दिया जाना

(iii) बाल-विवाह पर पाबंदी लगाने का प्रयास, बदायुनि ने यह स्वीकार किया है कि उसने विवाह के लिए लड़कों की उम्र 16 वर्ष तथा लड़कियों की उम्र 14 वर्ष निर्धारित की।

(iv) उसने संतानहीन विधवा को सती होने की प्रथा

पर पाबंदी लगाने का प्रयास किया तथा 1583
में एक बाल विधवा को सती होने से बचाया।
(c) हालांकि उसने स्वयं अनेक निकाह किये थे किंतु
अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में वह इस निष्कर्ष पर
पहुँचा था कि किसी पुरुष को एक ही महिला से
विवाह करना चाहिए तथा उसने यह घोषित किया
कि एक खुदा तथा एक बीबी की अवधारणा का
पालन हो। बदायुनी इस तथ्य को स्वीकार करता है।
(d) जाति विभाजन से भी वह असंतोष था तथा कहा
जाता है कि अपने महल में एक चांडाल को
खीदमत राय की उपाधि देकर उसे अंगरक्षकों
का सरदार बनाया था।

सांस्कृतिक योगदान ÷

(a) इंडो-इस्लामीक स्थापत्य के विकास में योगदान
(b) चित्रकला, संगीतकला आदि के विकास में योगदान
(c) एक अनुवाद विभाग की स्थापना कर अनेक
संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद

विज्ञान और तकनीकि ÷

तकनीकि में विशिष्ट रुची के कारण अकबर की
तुलना एक रुसी शासक पीटर दी ग्रेट से की जाती
है।